The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 1 | Issue 4 | November 2023
ISSN: 2583-973X
Website: www.theacademic.in

भारतीय समाज पर धर्मनिरपेक्षीकरण का प्रभाव

डा0 योगमाया उपाध्याय
राजकीय जी0एन0ए0 पी0जी0 कॉलेज भटापारा
(Govt. G.N.A. P.G. College, Bhatapara)

धर्मनिरपेक्षीकरण या लौकिकीकरण की प्रक्रिया अंग्रेजी शासन काल में कुछ विशेष परिस्थितियों में कुछ परिस्थितियों में विकसित हुई और इसके बाद अनेक प्रकार के आन्दोलनों , नगरीकरण औद्योगीकरण आदि के बढ़ने के साथ यह प्रक्रिया अत्यधिक तीव्र हो गई , जहाँ तक कि आज हैं। डॉ. एम.एन श्री निवास ने लौकिकीकरण या धर्मनिरपेक्षीकरण के सन्दर्भ में हुए अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तनों व प्रभावों को अपनी प्रसिध्द पुस्तक "Social Change in Modern India" में अतिसुन्दर रूप में प्रस्तुत किया हैं। उसी प्रस्तुतीकरण के आधार पर भारतीय समाज में धर्मनिरपेक्षीकरण या लौकिकीकरण के सामाजिक प्रभावों को इस प्रकार वर्णित किया जा सकता हैं।

अपवित्रता एवं पवित्रता की धारणा में परिवर्तन :– भारतीय जीवन और धर्म में पवित्रता और अपवित्रता की धारणा का महत्वपूर्ण स्थान रहा हैं। प्रायः भारतीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पवित्रता और अपवित्रता की धारणा अवश्य विद्यमान हैं। अपवित्रता को गन्दगी ,मलिनता व अस्वच्छता धार्मिकता या शुध्दता आदि के अर्थो में प्रयोग किया जाता हैं।

आज व्यवसाय जाति अथवा पवित्रता और अपवित्रता के आधार पर नहीं अपनाएं जा सकते हैं। आजकल सभी जाति के लोग व्यापार व नौकरी करते हैं। इसके अतिरिक्त आधुनिक समय में व्यवसायों की ऊंचाई–निचाई के लिए शुध्दता और अशुध्दता के आधारों की अपेक्षा धन, सत्ता आदि को स्वीकार किया जा रहा हैं। आज पुरोहिती का व्यवसाय एक अफसर गिरी के व्यवसाय के नीचे दर्जे का हैं। इसी प्रकार भोजन , खान–पान व विवाह सम्बन्धी नियमों में ढील आती जा रही हैं।

जीवन चक्र व संस्कारों पर लौकिकीकरण या धर्मनिरपेक्षीकरण :– जीवन में विशेषकर हिन्दू धर्म में संस्कारों को प्रमुख स्थान दिया जाता हैं। पूरे जीवन चक्र में अनेक संस्कार करने होते हैं। जैस– गर्भाधन , नामकरण , उपनयन , समावर्तन , विवाह , अंतेष्टि आदि। ये सभी प्रकार हिन्दु–धर्म में अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं उदाहरण के लिए उपनयन संस्कार का भी महत्व हैं। लौकिकीकरण की प्रक्रिया इन सभी संस्कारों के महत्व को कम करती जा रही है। यहां तक कि कुछ संस्कार तो बिल्कुल ही समाप्त से हो गए हैं।

धार्मिक जीवन में लौकिकीकरण या धर्मनिरपेक्षीकरण :– धार्मिक जीवन में भी धर्मनिरपेक्षीकरण बढ़ रहा हैं। पूजा–पाठ के आसानों पर बैठकर घण्टों पूजा करने के बजाए स्नान करते हुए ही पूजा–पाठ कर ली जाती हैं। इसी प्रकार आज भजनों ,हरि कथाओं आदि को आकाश वाणी या टी.वी. चैनलों पर घर बैठे ही सुन लिया जाता हैं आज लोग पण्डितों को दान देने के बजाए शिक्षा ,संस्थाओं ,समाजसेवी संगठनों , विधवा आश्रमों , चिकित्सालयों आदि को दान देना अधिक पसन्द करते हैं। विश्व हिन्दु परिषद की रचना भी धर्मनिरपेक्षीकरण का अनुपम उदाहरण हैं।

जाति संरचना पर प्रभाव :– आज हरिजनों की स्थिति पहले जैसी नहीं हैं। व्यक्ति जन्म पर आधारित समाज के विभाजन को अवैज्ञानिक मानने लगे हैं। इसका वास्तव में सम्पूर्ण श्रेय पूज्य बापू को ही देना चाहिए। हरिजन आंदोलन ने न केवल स्वस्थ्य जनमत का निमार्ण किया , अपितु सरकार को भी हरिजनों के उत्थान के सम्बन्ध में प्रयत्नशील बनाया। आज सामाजिक , राजनैतिक , धार्मिक और आर्थिक सभी क्षेत्रों में उन्हें राज्य की ओर से केवल समान अधिकार ही प्राप्त नहीं है बल्कि प्रत्येक प्रकार की नौकरियां , विधान–मण्डलों , मत्रिपरिषद आदि में उनके लिए स्थान भी सुरक्षित कर दिए गए हैं।

परिवार पर लौकिकता का प्रभाव :– सामाजिक जीवन में परिवार एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था का स्थान रखता हैं। भारतीय समाज मे ंतो इसका और भी महत्व हैं। यहाँ की प्रमुख विशेषता 'सयुक्त परिवार व्यवस्था रही हैं। वास्तव में संयुक्त परिवार एक अति प्राचीन संस्था है और इस देश की परिस्थितियों को देखते हुए यह उचित भी था। भारत एक कृषि प्रधान देश है। खेती ही यहाँ के अधिकतर लोगों का प्रमुख व्यवसाय रहा हैं। खेती का काम परिवार के आधार पर होता हैं और साथ ही इसके लिए कुछ लोगों की भी आवश्यकता होती है। परिवार में परम्परागत त्यौहार अब भी मनाए जाते हैं परन्तु केवल नाममात्र के लिए इसके अतिरिक्त उनको धार्मिक त्यौहार न समक्षकर ,एक सामाजिक अवसर अधिक माना जाता हैं। इस प्रकार परिवार के धार्मिक कार्यो में भी काफी कमी हुई हैं। पूजा–पाठ कथा , साधु–सन्तों में विश्वास आदि सभी बातों में लौकिक बातों का समावेश हो रहा हैं। स्पष्ट ही है कि परिवार पर लौकिकता का अत्यधिक प्रभाव पड़ा हैं।

ग्रामीण समुदाय में लौकिकता या धर्मनिरपेक्षीकरण :– जहाँ एक ओर नगरों में पर्याप्त लौकिकीकरण हुआ है , वहाँ दूसरी ओर ग्रामीण समुदाय भी इस प्रक्रिया से अप्रभावित नही है आज ग्रामीण समुदायों में निरन्तर जाति–पंचायतों की शक्ति घटती जा रही है और उनका स्थान जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों से गठित पंचायतों ने ले लिया है। एक अर्थ में जैसा कि डॉ. श्रीनिवास ने भी कहा है ग्रामीण समुदायों में राजीनीतिकरण की प्रक्रिया चल रही है। आज ग्रामों में प्रत्येक व्यक्ति राजनीति में सक्रियता से भाग लेने का इच्छुक हैं। देश–विदेश की राजनैतिक बातों का ज्ञान करने की सभी की इच्छा रहती हैं। शाम को चौपाल पर अब धार्मिक या सामाजिक विषयों पर विचार करने की बजाए राजनैतिक बातों पर बहस होती हैं। ग्रामीण जीवन में अब एकतन्त्र की बजाए प्रजातन्त्र का राज्य हैं क्योकि अब जमींदार और साहूकार के राजनैतिक अधिकार समाप्त हो गए हैं।

धर्मनिरपेक्षीकरण को उस सामाजिक विचार या प्रवृत्ति के रूप में समक्षा जा सकता है जिसके अंतर्गत धार्मिक प्रधानता या परम्परागत व्यवहरों में धीरे–धीरे तार्किकता व व्यवहारिकता लाने का प्रयास किया जाता हैं।

डॉ. एम.एन.श्रीनिवास– ''लौकिकीकरण या धर्मनिरपेक्षीकरण शब्द का यह अर्थ है जो कि जो कुछ पहले धार्मिक माना जाता था वह अब वैसा नहीं माना जा सकता हैं। तात्पर्य विभेदीकरण भी एक प्रक्रिया से भी है जो कि समाज के विभिन्न पहलुओं आर्थिक , राजनितिक , कानूनी और नैतिक के एक–दूसरे से अधिक से अधिक पृथक होने में दृष्टिगोचर होती हैं।''

भारतीय समाज के संदर्भ में धर्मनिरपेक्षता या लौकिकता की सरकारी या संवैधानिक व्याख्या धर्मनिरपेक्षता है अर्थात् संवैधानिक तौर पर सब धर्म बराबर दर्ज के हैं और इसलिए सरकार किसी भी धर्म के प्रति पक्षपात की नीति को न तो स्वयं अपनाएगी और न ही किसी व्यक्ति , संस्था या समुदाय को अपनाने देगी। यह विचार गांधी जी के भी थे। उनके अनुसार 'सेक्यूलर' (Seculer) का अर्थ धर्महीनता नहीं बल्कि सर्वधर्म–समभाव ही वे चाहते थे कि स्वतंत्र भारत में प्रत्येक नागरिक अपना धर्म पहचाने और दूसरे धर्मो के प्रति सद्भाव और आदर रखे। उनकी यह पक्की धारणा थी कि इस प्रकार से 'सर्वधर्मसमभाव' के द्वारा ही भारत की एकता मजबूत हो सकती हैं।

इस अध्याय मे हम धर्मनिरपेक्षीकरण या लौकिकीकरण से एक राजनैतिक अवधारणा के रूप में नहीं अपितु सामाजिक अवधारणा के रूप में विवेचना करेंगें। लोकपरकता पनपने के साथ–साथ धार्मिक तथा परम्परागत व्यवहारों में जब तार्किकता व व्यवहारिकता पनपती जाती है तो उनका स्वभाविक परिणाम एक यह भी होता है कि जन–व्यवहार से धार्मिक कट्टरपन व संकीर्णता दूर होती हैं और दूसरे धर्म के प्रति सहनशीलता व उदारता की भावना पनपते लगती है। परन्तु वह लौकिकीकरण या धर्मनिरेक्षीकरण का केवल एक परिणाम है। हम अन्य परिणामों की भी विवेचना इस अध्याय में करेंगें। उससे पूर्व समाजशास्त्रीय या लौकिकीकरण के प्रमुख तत्वों की विवेचना आवश्यक हैं।

धार्मिक संकीर्णता का हास :– धर्मनिरपेक्षकीरण या लौकिकीकरण का एक प्रमुख तत्व या लक्षण यह है कि इसकी वृध्दि के साथ–साथ धार्मिक कट्टरपन व संकीर्णता का हास होता है लौकिकता वास्तव में धर्महीनता नहीं है यह तो तार्किक व व्यवहारिक स्तर पर धर्म के अनुचित प्रभावों से व्यक्ति की सामाजिक मुक्ति हैं। इसी कारण धार्मिक व्यवहारों में क्रियाओं को पारलौकिक या आध्यात्मिक से नहीं अपितु सामाजिक उद्देश्य व व्यवहारिक लाभ के लिए किया जाता हैं।

तार्किकता :– धर्मनिरपेक्षकीरण या लौकिकीकरण का दूसरा तत्व यह है कि इसके अंतर्गत सभी धार्मिक व परम्परागत अन्ध विश्वासों व कुसंस्कारों को तर्क की कसौटी पर कसा जाता हैं। इसलिए इसके अंतर्गत सभी प्रचलित विश्वासों विचारों अथवा चीजों में तार्किकता का तत्व अवश्यक ही होता

हैं। दूसरे शब्दों में परम्परागत विश्वासों व विचारों को आधुनिक ज्ञान व तमे के संदर्भ में परिवर्तित व परिमार्जित किया जाता है।

विभेदीकरण की प्रक्रिया :– अंत में लौकिकीकरण के एक अति महत्वपूर्ण तत्व या लक्षण के रूप में विभेदीकरण की प्रक्रिया का भी उल्लेख किया जा सकता हैं। लौकिकता में विभेदीकरण की प्रक्रिया का तात्पर्य यह कि इससे समाज में विभेदीकरण बढ़ता है समाज के विभिन्न पहलु आर्थिक , राजनैतिक , सामाजिक , धार्मिक नैतिक कानूनी आदि एक–दूसरे से पृथक होते जाते हैं। इन सभी क्षेत्रों में धर्म का महत्व कम होता जाता हैं उदाहरण के लिए राज्य को ही ले लीजिए। पहले राजा पुरोहित के नीचे होता था , परन्तु आज धर्म और राज्य अलग–अलग हो गए हैं। स्पष्ट ही हैं कि इस प्रक्रिया के अन्तर्गत जीवन के विभिन्न क्षेत्रों का बन्धन समाप्त होता है।

धर्मनिरपेक्षीकरण के कारक :–

नगरीकरण :– धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया में नगरीकरण का अत्यधिक योगदान रहा हैं। यह तथ्य तो इसी से स्पष्ट है कि नगरों में ही धर्मनिरपेक्षीकरण सर्वाधिक हुआ हैं। नगरों में अत्यधिक भीड़–भाड़ ,उन्नत यातायात व संदेशवाहन के साधनों में साथ उन्नत शिक्षा ,फैंशन , भौतिकवाद , विवेकवाद , व्यक्तिवाद आदि सभी कारक मौजूद होते हैं। जैसा कि आगे के विवेचन से स्पष्ट होगा , ये सभी कारण लौकिकीकरण में अत्यधिक सहायता प्रदान करते हैं।

आधुनिक शिक्षा :– धर्मनिरपेक्षीकरण का शायद सबसे महत्वपूर्ण कारण आधुनिक शिक्षा हैं। आधुनिक शिक्षा का यहाँ अभिप्राय विशेष रूप से पाश्चात्य शिक्षा से हैं। वास्तव में आज जो शिक्षा पध्दति भारत में अपनाई जा रही है उसमें बहुत कुछ पाश्चात्य पुट हैं। इसके अतिरिक्त करीब 100 वर्षो से भारत पूर्णतया पाश्चात्य शिक्षा पाता रहा हैं। इसका एक स्वाभाविक परिणाम यह हुआ कि यहाँ की संस्कृति में पाश्चात्य मूल्यों (Values) ने प्रवेश पा लिया हैं। इससे यहाँ के धर्मो पर विशेष रूप से हिन्दू के नाम पर ही व्यवहारों को नही करते वरन् उनमें कुछ व्यवहारिकता का भी पुट देखते है। इतना ही नहीं आधुनिक शिक्षण ने सह शिक्षण (co-education) को अवसर प्रदान कर यदि एक ओर छुआछुत , अस्पृश्यता , पवित्रता–अपवित्रता आदि भावनाओं को निरूत्साहित किया हैं। ये सभी धर्मनिरपेक्षीकरण के ही लक्षण है जो कि आधुनिक शिक्षा का ही शिक्षा का ही प्रत्यक्ष परिणाम हैं।

सामाजिक व धार्मिक आन्दोलन :– सामाजिक और धार्मिक आंदोलन ने भी धर्मनिरपेक्षीकरण में पर्याप्त सहयोग प्रदान किया है। विदेशी शासनकाल के दौरान इस देश में सर सैयद अहमद खाँ , राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन , स्वामी दयानंद गोविन्द रानाडे , महात्मा गांधी आदि नेताओं ने अनेकों सामाजिक व धार्मिक आंदोलनों का सूत्रपात किया। इन आन्दोलनों ने हिन्दु धर्म के कुविश्वासों व कमियों की ओर संकेत किया और उसमें अपनी आवाज से पर्याप्त सुधार भी किए। इन आंदोलनों में आर्य समाज , प्रार्थना समाज , ब्रम्ह समाज , रामकृष्ण मिशन , शियोसोफिवत समाज , सर्वोदय

आंदोलन आदि प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं। यदि एक ओर ब्रम्ह समाज , आर्य समाज , प्रार्थना समाज ने जो कि पाश्चात्य सामाजिक मूल्यों और ईसाई धर्म की समानता के सिध्दांत से प्रभावित थे। उन्होनें छुआछुत , पवित्रता–अपवित्रता भेद भाव और ब्राहम्णों की उच्च स्थिति का कट्टता से विरोध किया तो दूसरी ओर पूज्य बाबू ने भी अस्पृश्य लोगों को 'हरिजन' नाम देकर उनका उध्दार करने का प्रयत्न किया। इससे भी धार्मिक पवित्रता–अपवित्रता व छुआछुत के भेद–भावों में पर्याप्त परिवर्तन आए इससे स्पष्ट है कि विभिन्न सामाजिक और धार्मिक आन्दोलनों ने भी धर्मनिरेपक्षीकरण की प्रक्रिया को प्रोत्साहित किया है।

धार्मिक संगठनों का अभाव :– धर्म–निरपेक्षीकरण के विकास में धार्मिक संगठनों के अभाव ने भी पर्याप्त योगदान किया है। इस सम्बन्ध में विशेषकर हिन्दु–धर्म का नाम लिया जा सकता है। वास्तव में हिन्दु धर्म के अतिरिक्त प्रायः अन्य सभी धर्म अत्यधिक संगठित हैं–जैसे मुस्लिम ,सिक्ख , ईसाई आदि। सभी धर्मो के अनुयायी अपने धर्म के प्रति अत्यधिक कट्टर है , साथ ही उनके पर्याप्त धार्मिक संगठन भी हैं। हिन्दु धर्म में अनेकों मत तथा सम्प्रदाय हैं दूसरे सम्पूर्ण हिन्दु धर्म सा कोई अच्छा संगठन नही है। जहॉ दूसरी ओर पढ़े–लिखे हिन्दु धार्मिक कट्टरता से दूर होते जा रहे हैं। ये सभी धर्मनिरपेक्षीकरण के आधार ही है।

भारतीय संस्कृति का धर्मनिरपेक्षीकरण :– यद्पि भारतीय संस्कृति को मूल रूप में धार्मिक ही कहा जाता है , परंतु आज इसी धर्म–प्राण संस्कृति का स्वयं ही धर्मनिरपेक्षीकरण होता जा रहा हैं। यह प्रक्रिया अत्यन्त तीव्र है पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में आकार यहाँ कि संस्कृति में पर्याप्त धर्मनिरपेक्षीकरण हुआ हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ की संस्कृति के धर्मनिरपेक्षीकरण में चल–चित्र , समाचार–पत्र , रेडियों , टेलीविजन आदि का पर्याप्त योगदान रहा है। इन सभी साधनों से विभिन्न धर्म , जाति , सम्प्रदाय एक–दूसरे की अच्छाई बुराईयों का ज्ञान करते हैं और एक–दूसरे के सम्पर्क में आते हैं। भारत स्वयं एक धर्म–निरपेक्ष गणराज्य (Secular Republic) हैं, अतः प्रचार के उपरोक्त सभी साधन भी धर्मनिरपेक्षीकरण के पक्ष में क्रियाशील बन जाते हैं।

निष्कर्ष :– आज व्यक्ति के व्यवहार में तार्किकता का तत्व स्पष्ट नजर आता है। आज भारतीय जनता विशेषकर नगरों के डॉक्टरों , वकीलों , मजदूरों , क्लर्को , दुकानदारों आदि के दैनिक जीवन पर दृष्टि डालने से यह स्पष्ट होता है कि उनके जीवन में धर्म का महत्व काफी कम हो गया है। इस प्रकार उनके जीवन में निरन्तर धार्मिकता का हास होना ही लौकिकीकरण या धर्मनिरपेक्षकीरण है।

संदर्भः–

(1) लेखक एम.एन.श्रीनिवास "Social Change in Modern India" "Social Change and Modernization in Rural India" (अध्याय 3) पृष्ठ संख्या 50–72 प्रकाशन ; 1966.

(2) द हिंदु , लेख "Modernization and Rural India" 15 फरवरी 2023.

(3) दैनिक भास्कर लेख संस्कृति में बदलाव 25 मार्च 2003.